वांगो सोसिया की दो कविताएँ

(1)

मुझे जीना है

मुझे जीना है
अपनी बेटी के लिए
मुझे जीना है।

मुझे जीना है
ताकि नर्म बिस्तर लगा सकूँ
और उसका मनपसंद नाश्ता बना सकूँ
मुझे जीना
ताकि उसके झोले में
ढेर सारी किताबें और फल भर सकूँ।

मुझे जीना है
ताकि उसे अपने हाथों से चोटी बनाना सीखा सकूँ
मुझे जीना है
ताकि उसे दोस्तों के साथ
खेलता और मुस्कुराता देख सकूँ
मुझे जीना है
अपनी बेटी के लिए।

मुझे जीना है
ताकि उसकी जिंदगी के संघर्षों में साथ दे सकूँ
उसके दिल में करुणा का बीज बो सकूँ
मुझे जीना है
ताकि उसकी जीत में, मैं अपनी जीत देख सकूँ
मुझे जीना है
ताकि उसके साथ एक अपनाया हुआ समाज बना
सकूँ
मुझे जीना है।

अपनी बेटी के लिए
मुझे जीना है।

मुझे जीना है
ताकि उसके साथ
जंगली फूल और लकड़ियाँ इक्कट्ठे कर सकूँ
मुझे जीना है
ताकि उसके साथ थोड़े फल, थोड़े सब्जियाँ उगा
सकूँ
मुझे जीना है
ताकि आने वाली पावस ऋतु में
बारिश का मज़ा ले सकूँ
मुझे जीना है
ताकि उसके लिए फूल का हार बना सकूँ
मुझे जीना है
अपनी बेटी के लिए।

मुझे जीना है
ताकि उसे कुश्ती लड़ना सीखा सकूँ
मुझे जीना है
ताकि उसे फूल से त्रिशूल बनना सीखा सकूँ
मुझे जीना है
ताकि उसे अधर्म का नाश करना सीखा सकूँ
मुझे जीना है
ताकि उसे कलम की सही पहचान करना बता सकूँ
मुझे जीना है
अपनी बेटी के लिए
ताकि उसके साथ

मैं एकता, प्रेम और शांति का संदेश दे सकूँ
वसुधैव कुटुंबकम का मतलब बता सकूँ।
मुझे जीना होगा,
हाँ, मुझे जीना होगा
अपने बेटी के लिए।

(2)

मैं हारा नहीं इस जंग में

यह कहानी कभी मेरी थी ही नहीं
बस कुछ लोगों की अस्पष्ट आवाजें थी
जिसे मुझे आवाम तक पहुँचाना था

मैं हारा नहीं था, इस जंग में
मैंने बहुत कुछ सीखा है, जाना है
और
मैंने देखा है
लोहे की तरह तपती धूप में
पत्थर तोड़ते हुए, उसे देखा है
घर पर आते ही
एक फूल के रूप में उसे देखा है
मगर कहो तो सही , बताओ तो सही
बस एक बार, बस एक बार
कि हो कौन तुम ?
यह लोग तुम्हें उस हालत में न छोड़ें
कि तुम एक पत्थर तोड़ पाओ
मैंने देखा है
उसे एक ऊँची ईमारत से कूदकर आत्माहत्या करते हुए
एक माँ को अपने बच्चे के लिए तड़पते हुए
मैंने देखा है...
एक अठारह साल के बच्चे को घर से निकलते हुए
अठारह साल का बच्चा ? अठारह हो या इक्कीस हो या पच्चीस
एक माँ के लिए उसके बच्चे उसकी दुनिया होते हैं
मगर तुम क्या समझोगे?

यह दर्द मेरा नहीं, उन माँओं का है
जो पितृसत्तात्मक समाज में अपने बच्चों के लिए न लड़ पाई
यह दर्द उन बहनों का है,
जो अपने भाइयों के लिए खड़ा न हो सके
यह दर्द उन औरतों का है,
जो अपनी आवाज़ न बुलंद कर पाई

पहचानों इन दरिंदों को
ये हत्यारे हैं
भावना, अविश्वास और ऐसे कई लोगों के हत्यारे हैं

यह जंग अब तक चल रही है
और इस जंग में केवल मैं नहीं
इस जंग में वे सभी हैं
जिनका इस समाज ने
केवल हिंसा, अत्याचार और शोषण किया है

आज हम उठेंगे, हम लड़ेंगे
आप रोकना मत, हम करेंगे सामना
यह कौन सा धर्म है, यह कौन सी व्यवस्था है
जो मुझे आप लोगों से दूर रखती है

नहीं चाहिए ऐसा धर्म
जो मुझे मेरे परिवार से अलग रखता हो
नहीं चाहिए ऐसा धर्म
जो मुझे समाज से अलग रखता हो
नहीं चाहिए ऐसा धर्म

जो मुझे अपने आप से दूर रखता हो
और उन लोगों का क्या
जो धर्म के नाम पर पाप पर पाप करते है
सही कहा है ओशो ने
'जब तक धर्मो में पाप धोने के व्यवस्था है, लोग
पाप धो-धो कर पाप करेंगें।'
माँ, ये वही लोग हैं
जिन्होंने मुझे मानसिक रोग का शिकार कहा।
माँ, ये वही लोग हैं
जिसने मुझे पाप के रूप में जन्मे हो कहा
और तुम मान गई।

न तुम समझी, न लोगों ने मुझे समझने की कोशिश की
तुमने यह कहकर छोड़ दिया कि तू बड़ा हो गया है
अपनी जिंदगी जी
तुम यह बात बार-बार क्यों दोहराती थी
हाँ माँ
बड़ा हो गया हूँ
आँचल से दूर कर
सामने खड़ा तो कर दिया
मगर अब जाऊँगा कहाँ
मुझे आपकी आज भी इतनी ही ज़रूरत है
जितनी उस वक्त थी
जब पहली बार आपने
लड़खड़ाते हुए चलना सिखाया था
जीवन में पहला अक्षर बोलना सिखाया था

मगर मैं मासूम
इन दरिंदो से अपरिचित क्या करता
आज बहुत बड़ा हो गया हूँ
एक साहित्यकार बन गया हूँ
आज गलत और सही में फर्क पहचानता हूँ
आज बहुत बड़ा हो गया हूँ
शब्दों का मूल्य जानता हूँ
आज इतना बड़ा हो गया हूँ
कलम को तलवार से बलवत्तर मानता हूँ
हाँ, मैं बड़ा हो गया हूँ
कहानी सुनाता हूँ
लोगों के हक़ के लिए लड़ता हूँ
मैं समलैंगिक हूँ
मैं इंसान बनना सिखाता हूँ

अब बोलो- है कोई, जो मुझे रोकेगा?
है कोई जो मुझे तोड़ेगा?
हाथों में समाज द्वारा पहनाई ज़ंजीरों को तोड़ा है मैंने
अब कंधा से कंधा मिलाकर चलता हूँ

तुम रूकना मत
वे रोकेंगे, उठाके पटकेंगें, वे ढोंग रचाएँगे
मगर तुम रूकना मत
तुम हार मत मानना
वे पीछे धकेलेंगे, तुम्हें ज़लील करेंगे
मगर तुम हार मत मानना
तुम उस मनुष्यता के मशाल को लेकर चलते रहना
इंसान बनना
तुम इंसान बनना, जो प्रेम करना सिखाता हो
तुम एक बेटा बनना, जो सब की इज्ज़त करता हो
तुम बेटी बनना, जो सबकी मदद करती हो
तुम एक पिता बनना
जो मुसीबतों का डटकर सामना करता हो
तुम एक माँ बनना, जो सबको संवारती हो
हाँ, मैं आज हारी नहीं माँ, मैंने सीखा है
मैंने जीना जाना है
और कैसी हार माँ, अपने परिवारों से, अपने लोगों से
और यह कैसी जंग

जो यूँ ही छेड़ दी आप लोगों ने।
ऐसा दर्द जो सहन न कर सके
ऐसा खाना जो खा न सके
ऐसा रिश्ता जो निभा न सके
ऐसी जिंदगी जो गुजारी न जा सके
हमने वो जिंदगी गुजारी है

हमसे पूछो परिवार से अलग होना होता क्या है?
हमसे पूछो बिना इज्ज़त की जिंदगी होती कैसी है
अरे, हमसे पूछो ऊपर न छत, न साथ देने वाला हो
तो घर-बार होता क्या है ?
अरे, हमसे पूछो बिना माँ के जिंदगी होती कैसी है?
जब इंसान मजबूर हो आत्महत्या करने को
तो दिल की आवाज होती कैसी है
हमसे पूछो !

सुनती हो? या बहरी हो तुम
जो अपने बच्चों की चीख न सुन पाई
देखा है? या अंधी हो तुम
जो अपने बच्चों का दर्द न देख पाई
कुछ बोला तुमने या गूंगी हो ?
जो अपने बच्चों के हक के लिए न लड़ सकी।

किसी को रंग के लिए, किसी को लिंग के लिए
किसी को जाति के लिए।
नहीं माँ, ऐसी दुनिया नहीं देखना चाहता
जहाँ एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का शोषण करे।

जब आज इस बड़ी सभा से
अपने घर वापस जाएंगे
इसी आशा में, इसी ख्वाहिश में कि कुछ बदलाव
हो, कुछ नया हो
जहाँ प्यार हमारी भाषा हो, मनुष्यता हमारे दिल में
और शांति लोगों के विचारों में
एक परिवार की तरह हो
बच्चों के झोले में
ढेर सारे फल और किताबें हों
एक समाज जिसमें सहज स्वीकृति हो
ऐसा देश जहाँ प्यार करने की आजादी हो
कौन रहता है इस देश में
हम रहते हैं, और हम ही रहेंगे, बदलाव हम लाएंगे
अब समलैंगिक को हम परिभाषित करेंगे
मगर तुम वादा करना
तुम साथ दोगे
पीछे मुड़ोगे नहीं
तुम वादा करना
तुम हार नहीं मानोगे
तुम्हारे साथ में हूँ, हम हैं
हम सब हैं
तुम्हें वो पहला कदम बढ़ाना होगा
खड़े हो कर कड़े निर्णय लो, अपने लिए खड़े रहो
क्योंकि
यह जंग हम कभी हारे ही नहीं
हमने सीखा है, हमने जाना है
कि मनुष्यता से बड़ा धर्म–कुछ है ही नहीं।

***

*(**लेखकीय परिचय :** वांगो सोसिया राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं।*
मोबा: 8131806570, ई-मेल : wanggosocia@gmail.com)